विनोद बाबू अमर रहे !   विनोद बाबू अमर रहे !   विनोद बाबू अमर रहे !

विनोद बिहारी महतो की ग्यारहवीं पुण्य तिथि पर
पढ़ो लड़ो मंत्र से प्रेरित कुड़माली कविता डाली।

"दिवाकर"

रचयिता :

पी.पी. के सरिया (एम.ए. कुड़माली)

छाफईया

करुणामयी केसरियार

बड़ा जमुआ (धनबाद)

"लोक संस्कृति आरवाड़ा

बड़ा जमुआ, धनबाद (झारखण्ड)

BVP-1865
~~[illegible]~~ 9/9.
4/1118.
INT-4554.

विनोद स्मृति

बड़ादहाक कड़ाच माटी,
विनोद माहतक जनम खाँटि,
समाज सुधारे गढ़ले पाटी,
सारा जीवन चेष्टा करले, गुचावे कुरीति।

कानून पढ़ी सरकार संगे लढ़ी,
गरीब दुःखी क्रे देलसिक अधिकार काढ़ी,
लाल झण्डा राजनीतिक हाथेक खड़ि,
सबुज झण्डा झारखण्ड मुक्तिमोर्चा गढ़ि।

शोषनहीन झारखण्डेक राजेक सपन,
सबुज विप्लव नया राजेक गठन
पढ़ो लड़ो मंत्र करले दान
पुण्य तिथिक दिने प्रणाम हे महान्।

चाकरी

जखन हामर चाकरी रहली, रहली मने आशा।
जीवन भर पावब बुझी, तहर भालअ बासा।।
काहौं दै कै किना हेलै, ऑचका देखिअ हाय।
एक नोटिसे चाकरी गेलेक, तहराअ आर नाय।।
एखन हामि किना करब, भाभी–भाभी सारा।
दुपहरे ऑधर देखिअ, झरय ऑखिक धारा।।
लेखि–लेखि हौंथ टाटालि, चोखे सुझै कम।
परान घड़ी चलेय धीरे, फुराइत रहेय दम।।
भाय बन्धु काहौं एखन, तहीं काहौं रहलै।
चाकरी गेलेइक सबाई गैला, तहुँ मकै बिड़लै।।
आरअ हामि आनब टाका, तहर बयरात जौरे।
चाकरी बेबसा लोटरी बाजी, पारिअ जैसन करी।।
तत्र लखी सती साद्धी, तम्ही हामर जान।
तके छाड़ा हामर जीवन, सुखल काठेक अैसन।।
इठिन उठीन घुरी–घुरी, पावब एकटा कन्हा।
होमरा चोमरा लोक धरते, घुरइहे पेछु–पेछु।।
लोके हामके पागल कहत, मुक्खु कहत कैऊ।
कैऊबा हामे भौंड़वौं कहत, सहै जाब सेऊ।।
केवल सहे निहिं पारिओ, तके निहि देखलै।
तैंञ हामर गया काशी, तैंञ विन्दावन भैले।।
तैंही पिया तैंही बंधुआ, देवी तैंही हामर।
धन्नी मानी जीवन हामर, चुमी के तर अधर।।
घुरी आवै आवै, हामर भौंगा खोंधाय।
आधार नामय चुपे–चुपे, बुके बजर गिरेय।।
काइल बिहाने डाक पावलिअ, जाव कि ना जाब।
मनेक मौंझे दइसत भेलोअ, काहौं डाड़ाउब।।
लोक जनेक गाहदि हैतेक, बेड़ि ठेला–ठेली।
परौन लेइके टाना टानि, घुरइते बेरा बेरी।।
तर कथा मने करि, जाइआ तड़ि घड़ि।
घुरी अदि ना आइअ, जरि दैसिन नुड़ि।।
जायेक आगुइ ऐहे कथा, हामे जाहिये कहिके।
चाकरी बिना इ जगते किछु आर नेइखेक।।

शक्ति

शक्ति के विनाश नहीं परिवर्तन हेवइक

भिन्न-भिन्न रूपे
शक्तिक शक्ति जने-जने,

संचार करई इथार माध्यमें,
प्रकाशे देखइए दुश्मन,

चुम्बक शक्ति करई आकर्षण
ध्वनि शक्ति सुने पावे,

शक्ति दादाक गरजन।
ताके भुलिए निहि,

तोके भुलब निहि,
तोर शक्ति हामराइक मांझें।

भोगता मेला

● *पतित पावन केसरियार, बड़ा जमुआ*

झारखंडी गाँव बड़ा जमुआ
बूढ़ा बाबा मंडप थान
ठाक गुड़–गुड़ गाजन मेला
नंदी भिंगी काप–झाप
नाटवा माछानि छौ नाच

बाजारेक बाबू गिला भाले
तीन भुवनेक तीन खिलान
माझे खुटी गाड़ी चरखी टान
पाट भोगता घरे–घरे बुले
झांक ताले बूढ़ा बावाक नाम।

भोखा भोगताक निष्ठा भक्ति
आदिम कालेक आदिम ऋति
मोटा–मोटा कांटा भूंके पीठे–हाथे
हांसते–हांसते बूढ़ा बाबाक नाम
देखेजा बाबू भोगता घुरा
इअ देश टाय मलिक कैसन धारा।

मानले शिव ना मानले पाथर
अनार्य देवता शिव विश्वास अपार
शिवहीन दक्ष यज्ञ लण्ड–भण्ड
वेद–पुराणेक एक खंड

साँपेक खेला

झापान बूढाई साँप खेलाय,
गाँवेक कुल्हीक मुड़ाय।

ढोड ढामनाक विष नाई,
खरिस साँपेक मरद नाय।

साँपेक खेला देंखबे बाबू,
झारखण्डेक झुडे।

भादर मासेक चिड़का रोदे,
ढामना-खरिसेक जोड़ लागे।

नेंजेक भरे डाढाई,
आछाड खायेक गिरय।

बसत माटीक ढोडाटा ईचरी देखें,
खरीस साँपेक उई ढोपी।

झारखण्डेक मूली सारय, पियाल, महुल,।
बूझी देखे, ऐसन करिस ना भूल।

परेक खेते बाहबा हाल,
चासा नीहीं मुनिस कहतोअ

हामर खेत हामी हाईला,
ताय कौन रे चेंदरया।

चुटिआई ढोल काटे

● पतित पावन केसरियार
शिक्षक, मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआ

भालहस किना मके
ठीक करलाह तके
हमर जीवन जातअ
आर तर मास खातअ।
बतर पावले चुटिआई
ढोल काटे,
गारह सितंबर देखाई देलअ
गटे दुनिआके।
भारत हामर देश
कश्मीर हामराक शान
तोरे लागअ बीज बुनल
हिन्दुस्तान पाकिस्तान।
तर शील तर लड़हा
तरे भांगलअ दाँतेक गड़ा
बहुत सहलिह देखलिअ रंग ढंग
आतंक वादेक पीड़ा।
दुशमन के छटअ ना भाविस
पेछु पस्ताबे।
गटे दुनिआई तर धाक चलअ
खजे नाई पाटले लादेनके।

'जोहारगुरुजी'

● पी पी केसरियार
शिक्षक, मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआ

दुमकाई डुगडुगी बाजलेय
राजधानी राँची हिली गेलेय
जोहार गुरुजी जोहार
कुरुक्षेत्र धनंजय, गाण्डीव टंकार
झारखंड शिव, धनुषेक चमत्कार
केलिकालेक सरग सांसद विधान समागर
अपमानित लांछित आदिदेव शिव निर्विकार
दक्षअंग लड़भंड ईंद्रासन टले
नन्दी भिंगी चौसठ योगिनी नाचे धारातले
यगीके भाग काड़िलिया अधिकार बले
कमलेक फुलनिही, टुष्टी शिव केल फुले
हनुमानेक पुछे आगुन बुझे नाई पारे
सोनाक लंका पड़ाई देडलो बढ़ा बांदरे
धधक धधक आगुन उड़े गोटे झारखंड लहरे
अशोक बनों बंदी, झारखंडी, रीति निति कादोय अझरे

कहावते झारखंड

● *पतित पावन केसरियार, बड़ा जमुआ*

घरकन्ना टा तोर चाभीकाठी हामर
झारखंड राज्य पूरा भेलो एक बच्छर

निर्धन्नाय धन देखलेऽ दिने देखई तारा
बिन भातारी भातार पावले बासे बापेक पारा।

कोँड़े-बांसे मेल नाँञ
झारखंड सरकार नामेक कामेक नाँञ

आनाड़ीक धान भाना ढेंकीं कुटे मिछाई।
साँढ़े-साँढ़े लड़ाई लागे

बाछुर गिलाक टेंग भाँगे
बाँस से बाँसेक कैंची दढ़भ लागे

साउड़ा उजु गाँइठ डेगे-डेगे
परेक धने पद्दारी करई दादागिरि

ढंगन चलन चंदर गतर आरि गुरि
बर घारेक पिसी कनिया घरेक मासी
पईसा न कौड़ी मांझ बाजारे दोड़ा-दोड़ि।

कुटुम

'संगा घरे' कुटुमेक मान नाय,
भाई हामर आवले।

चाय पान धूरे जाक,
जेल छोटी नाय मिले
बयसे देहथिक छेड़ा खाटी
उड़िस भत्ती गोहाल घरे।

'फफरा' मुड़ी परास पातेक खाला,
तेल बिना पियाज काटा
मरिच नायमिले।

खाये पावोय बूचा थारी,
परसन खोजले राँधोनी चुड़पे हाड़साले,
हास–खुखड़ी गोतनी निखाक दाहिने,

भेसूर बाहयराय, फाटल जाले,
पोंठी माछेक बाहाना।

नाम गहगही पेचा राजा
मुनिस गिला पाराय जाथिक,
बासी माढ़ेक ढ़ेसना।
सूई सुताई मिल नाय,
पतित पावन कोदय आगूढ़ कुने।

भजना

झारखण्डेक माटि,
झाटी साल धान।

भजनाय गेलेक बीच-बिहन,
मलनदा आर चिचुर घास।

भजनाकलेक मायेक भाखि,
टुसु-भादु, करम, झूमर गान।

चाइल-चलन रीति रेवाज,
भजना लो आपन संस्कार।

जाहिर गराम मड़प थान,
मानकी मूण्डा माहतो पाहान,

भजनालो तोर खूँटेक मान।
बहु-बेटी पिधो झिलिक साड़ी,

बेटाय पिधों पेन्टुल।
फूराय गेलो खेत खरियान,

सिराय लाहो कुँचड़ीक धान,
लेखा पोढ़ा लोक गिलाक

भोजना विचार,
पतित पावन कहे वीर-वीचान समाज।

महुल मास

भोमंराक गुण–गुण महुआक वन
भिनसोरा मधु रसे भरा महुल
कोकिला कुहु तान हेमाल वातास
यौवन ज्वार अगोचौरेक प्रेमेक आभास

चितचोर चंचल उदास मन
सरमे–मरमे कवि चित्त मधुर सपन
मन मोहिनी रुप प्रभातेक किरण
जीवनेक पूंजे–पूंजे आंधार कालो

नव घनश्याम बांसुरी बाजाय बेताले
नी जानी कखन प्रिये धरि टानय आंचल
जगतेक अमंगल काक आर चील
सकाल सुंदरहोक विश्व निखिल।

चासीक जेनी

● *पतित पावन बेसहीयार*

टिपि टिपि पानी गिरई भाँगल धार,
निझुम निशुति राति गाड़ आँधार।
माझाई कमल उढ़ि ढोग करि जड़
चासीक जेनीया कोदय अंगठल दुयार।

दरु दरु बुका करई मन डिस छिस,
बाहरे बेरिया मेघ हड़ हड़।
अकर संगे पानी गिरई झम झम,
ऐछेत कोदना शुरू पड़ पड़ धर।

अकर संया घारे नाई जमिदार घारे,
सेंई बुझि जामि रहई वेकुल हियोई।

वेकुल जयन बुझि अेहा बारामढाय,
खजइक अकर मन दोड़ि आवेलाई॥

'माताल'

● पी.पी. केसरियार, बड़ा जमुआ

भादर मासे काड़ा माताल
मरत माताल ढंड़हा भरले ....
रात सिरालें भुड़का तारा भाले
पसराई पसर खुले
टेंग अशराई छिंड़ा खाटे।
दिनेक बेरा बयार लिसन–
आँख टुटा लाले लाल आखड़ाई बुले।
काटा लटाइक दिने
कतेक लकेक कुलकुलि
मेनेक मिछाई हेंसरानी–उमतानि।
संसारेक बेड़े कठिन नियम –
आपन बुइछे बाँचत
परेक बुईछे मरत,
पांथरे पाथर कटई, लेहाई काटे लोहा।
टेढ़ि हेले बूइध नाशई बुझे नि पारई
घाघासना–मातासना
मानुष जिनगानि आढ़ाई दिन
भाई भईयाद, केउ निहि देवशु साथ।
परेक कथाई चलिस नि वाट
आपन करम रहत तरे साथ
आधा धुरे छाड़ि देवशु हाथ
आँखि धुरा देइके करतो बेईमानि
सुई सूता पिंधावशु –
ढोल बाजाई टोली देवशु पेछु समे करत मुसियानी।

'करम'

● *पतित पावन केसरियार, बड़ा जमुआ*

भादो मासेक एकादशी करमेक चारी।
गांवें-गांवे करम आखड़ा नाच लागई भारी॥

भाई बहिनेक अटूट प्रेम जनमेक जोड़ी।
दिहा-दिहा करम राजा, भाई, हामन लम्बी उमरी॥

जाहू-जाहू करम राजा जाहू छमास।
एसन दिने आनबअ घुराई एहे मने आस॥

टाँड़-टिकर, खेत, बाड़ी हरा भरा राखिस।
करम डाले साक्षी राखि देवेहे आशिष॥

कृषि देवता करम तोहें मानत करी।
धन-धान, फल-भूल राके पूर्ण करी॥

करम-धरम भाई-भाई प्रकृति पूजारी।
झाड़ जंगले बास करि तोरे आस भरी॥

समाज संस्कृति कुड़माली करम डाल धरी
मुग, कुरथी, बहुला हरत की साल कतारी।

जेंई-जहाँ जेइसन आहा संस्कार राखा जोरी।
पतित पावन कहई आपन रीति दिहा ना छाड़ि॥

‘धनबाद’

● *पी.पी. केसरियार, बडा जमुआ*

माटीक तरे छिपा धन,
धनबाद हामर नाम,
सन् छप्पन आनभुमेक,
पेट चिरि लेलिअ जनम ॥

आज मञ झारखण्डी हेकी,
गटे मुलुकेक हुल्का-हुलकी,
दिन राइत हम्बल हाथुड़ी ठोंकाठुकी,
छेंछीदुमि खेलहत लुका-लुकी ॥

लाखो बरस बीती गेली केरिया गतर,
डिनामीट फटका भांगलअ कमर,
मोर हियांञ केवल आइग भरा,
कने बुझतअ पड़ल अन्तर ॥

जरई जरई आइग बारअ मास,
आषाड़ेक घोर बरसा मिटय निही पियास,
उबड़-खाबड़ गाढहा कड़ा खुसा,
ढिप-ढाप पाथर गात खरखइसा ॥

गजलीटांड़, बागडिगि, चासनाला
आर कतेक दिन सहन सुनि भाला,
कालामन-कालाधन, हुंस नाईं बाबुगिला,
जेदिन हामि हदकि उठव देइखवें - ''धँशअ लीला''

बिरसा भगवान

पहिला साँझ भिनसरिया
बेरा डुबइक आर उठइक
कतेक लकेक आशा–भरसा
देशेक मायेक माटीक खातिर
मर मिल जीवन देवइक सपन
आज अमर बिरसा भगवान
बन–जंगलेक अधिकार
शोषण–जुलूम–अत्याचार
समाज संस्कृति
सशस्त्र आंदोलनेक पुकार
बिरसा मुंडा जोहार! जोहार!!
तोरे बाटे बाट धरिजतेक क्रांतिकारी
निर्मल, शक्ति, बृहस्पति, बिनोद बिहारी
देखई देलेक बलिदानेक शक्ति
युग–युगेक अमर कृति रचनाकारी।

जी.टी. रोड

● पी.पी. केसरियार

कतेक इतिहास गांथल हामर हियाई
शोषण शासन दमन नीही जाई पुछाई
मुगल अंग्रेज, संथाल लेखा जोखा नाई
स्वाधीनता गणतंत्र साम्यवादेक लड़ाई।

पथेक राजा जी.टी. रोड कहड़ सभेकाई
देशेक राजा शेरोशाह बनाइ देलो भाई।
कोलकाता ले पेशावर हजार मील लम्बाई
दुओधरी दोंजे–दोंजे विशाल वृक्ष शोभा पाई।

कतेक घटना दुर्घटना छिनतई
मिटिंग मिछिल विरोध मोर छति याई,
शहर नगर गढहलाही धारी–धारी बेजाई
दिन राइत गाड़ी लोरी रीचिक विराम् नाई ॥

कतेक राजा बादशाह मेत्री के करलिअ विदाई
पांच सौ। बछरेक स्मृति विसरिएं नाई
नेता महा पुरुष देश भक्तेक निशान याद जगाई।
हजार–हजार निघर निरजगार पावई ठांई।

भादर मास

● *पी.पी. केसरियार, बड़ाजमुआ*

भादर मासेक चिड़का रोदे घर जामाया पाराय।
पुनना दिनेक शुलुक हेकेक मिछा कहिअ नाय।
भादर मासे दिने तारा देखे पाय।
भादइरा पिरिति श्याम के सुहाग जाताई।

भादर मासे भरा यौवन बन्धु घारे नाई।
भागल घारे मुलगुड़ी टायं चांद देखाई।
भादरे करम परब भादयरा मांदर बाजाय।
धितांग-धितांग झूमर नाच लागहाहेइ आखड़ाय।

भखा दिन भादरेक राजाई रिन खाई।
लेटअ धांटा भाई-भांजे लागइ लियाई।
जानाईर लेटअ गद-गदअ, गुंदली कदअ भुली नाय।
पेटेर माड़े भतुमा खाते घर खरचा नाय।

भादरेक पूर्णिमा राइत दिनेक लिसन देखाई
झारखण्डेक झाड़ जंगल प्रकृति सुन्दरताय।
काशी फूल भमअकाल माठ भरि जाय।
झिंछि पका जनाकी झकमकाई।

भादो सांकराइत छाता परव लागई काड़ा लढ़ाई।
गोरु गोंठे भादरिया सूर बांशी बाजाई राखालाई।
भुरका तारा भादरे भिनसरिया सभके जगाई।
पतित पावन भादर के आदरे प्रणाम जानाय।

"मनीन्द्र स्मरण"

● पी.पी. केसरियार

इन्द्रजितिया नाम तहर मनीन्द्र
मंडल समाजे एक दिन रहलें तएं इंद्र,
[illegible] गठन,
तेईस मार्च रहि गेलो अकर निशान।

भूले निपारब सेईदिनेक हादसा टा
अहमी महामेला सरायढेलाक मड़पटा
हठात् सुनी सरगोल आवाज गुलिटा
इन्द्र पतन असाड़ देह मेला सन्नटा।

आज हेकै ओह दिन
पुण्य तिथि स्मरण करहै संगी
झारखंड मुक्ति मोर्चा सिपाही
समाजइक अगुआ गुचावेक कुरीति।

झारखंड राज्य निभूलत तर अवदान
अजय अमर करतउ गुणगान
तोरे आदर्श बांटे चलतअ सभे जुवान
नया समाज जैसन गढ़त ऐहे अरमान।

मंदाकिनी

● पी.पी. केसरियार

मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआ, धनबाद।

मंदाकिनी विनोद जननी,
झारखण्ड पितामह पुत्र प्रसविनी।
शत-शत, पापी उद्धार कारिणी,
भंगीरथ तपे तुष्ट पतित पावनी॥

शबरी प्रतीक्षाय पचीस बछर विताय,
अटल आत्म विश्वास मनेक मणि कणय।
अभिशप्त वित्त रहित शिक्षा नीति हाय,
आसे-आसे दिन काटे व्याकुल हियाय॥

सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, चार युग वही जाय।
कॉंग्रेस, जनता, भाजपा कन्ह फरक नाई॥
तेला मुड़े तैल माखाय सभेकाय।
टाकाय टाका आनई गरीबी नहीं जाय॥

शिक्षा पर मिसाईल परीक्षण किया शिक्षा-माफिया,
शिक्षा नीति पर सस्ती राजनीति नई सिलेवस बनाया
शिक्षा पर करोड़ो बजट का ढिंढोरा पिटावाया,
मेनेक झारखण्डेक कलंक वित्त-रहित नहीं सुलझाया।

अघन मास

जाकर न की चाकरी आहेक
मासे–मासे अघन मास हेवेक,
चासालोकेक अखन अघन मास।

पचास बछर आगुइ कहेतेला
चाकरीक भात खापरी
आज चाकरीक मान सभेक उपरी॥

विहिन बीज आफर गड़ी
कादा घौंटा रोपा–नीड़ा माड़ा
बछर दिन आघन मास एक बार।

चास–बास बाइद कनाली सग्गेक भरसा
निहित खरा झरा मुलेक नाई आशा।
ओफिसेक बढ़अ बाबू, नितई अघन मास
आयें–बायें–दायें सुधाई फरमाइस।

शकिल मियाँ बी.सी.सी.एल करई ड्राइवरी
राइत दिन घुराई बुलई फटफटी गाड़ी।
फालना माहतोक विसुम चास
बेटा के पढ़ावलेक एम.ए. पास।

आस रहलेक पावताक कनह बड़का चाकरी
एखन देखइए धारे रलइक गोगरी
सांझ बिहाने चोंगा विधि घुरई शहर धारी॥

चालें माइरि

चालेअछेठिन अछेनद्रीक छाईर
जेठिन काशफुल आछेक भभकाल,
चाले जाव बालिक दिपिटा
छेवक हामन मन जेंसन कातला माछेक उफाल।

चाले माइरि अछेठिन अछे बनेक हाइर
जहाँ आछेक रांगा देंशफुल कुहेलिक डाल
आकाओ नील कर्तक पाईख पाखुड
हेमाल बारसात बहतेक भालि रहव तौरे कुंदक नाक।

चाले जाव एक ताला दालनिक छात
दुऐक वादे माइरि उठतेक चांद॥
एछेफांके कहिले सब कथा
गहिले जतेक गाण पिरोशि में हामि एका, मुड़ेक उपरे चाँद।

आर केइ क नेझखत सुनेक कहेक,
तोर आर हामन माझे।
चांदेक आलअ गिरेक हामराक मुंहे,
सभे भाण मुते हेवेक,

सभे जसेन विसरी जाइक, सुखी होक भगवान,
निझुम राति तोर मुहे हामन युना
रहोका आकासेक चांद,
हामराक भाल बास बोचि।

'गड़ात्'

● पी.पी. केसरियार

समाजेक आखाड़ा बुड़हा बावाक थान
घाघुर माहुर लकेक गाहदी

गड़ात् बुड़हाई रन देईथिक
सिंघाल चोरेक सिंधकाटि

हुंसियारे निदावबेहे
निहित विहाने उठि कोंदबे है

मायेक भाखि, मायक रीति
आमाबसाक अँधारे लेले लुटि

हाथेक पातेक सभे जात
कांहा गेल झमुईर गान

फुराल नागड़ाक काठि
झिंगफुल टुसु भादु करम भान
चोरी गेल मुहेक भाखिटा

'आषाढ़'

● *पी.पी. केसरियार, बड़ा जमुआ*

आषाढ़ेक नव–नव मेघेक माला
घने–घने थीर बिजुरिक खेला
मन उदासी पियाक आसे दुवार खुला
चमकी–चमकी भासी उठेय उकरे मुख माला ॥

पिया हामन घारे नाईझरझर बारिश अकेला,
पड़–पड़ घार अंगठल दुवार आँखी दुटी खुला,
आशे–आशे कोखन निशि भोर भेला
योवन पियास रही गेल बोंधुवा दागा देला ॥

फरीछ बिहान हल–कांधे जो हयला
गाय, गोरु, छागल, भेड़ी डहरे बागायला
घुंघ माथे थके–थके, सुर छींगा पुयला
गाहतो बाटेक धान रोपई कामीन गिला ॥

दुपहरे गोरु गोठे बांसी बाजाई राखायला
मुडेक ऊपरे सूरज ठीकरा रोदे झीलफिला
आफर भार कांधे टीरी–टीरी चोलय मनभुला
पतित पावन कहेय घार आंगनेक खेला ॥

पंचायेत वोट

● *पतित पावन केसरियार, बड़ा जमुआ*

बहुत दिनेक बादे सुनहे
नकी पंचायेत वोट हैतक,
फुसुर–फासार – कानाधुसा,
गालमारहत आनखाई।

छटअ बड़अ उभरी नेता
समीने आपन आपन अंक कसहत्
दाड़सबोधहत मने–मने
जोड़ घटाव गुणा भागा।
नाम गह–गही पेंचा राजा॥

जाकर जैसन बुद्धि भरसा,
उदमा ललेक उमतानी
घाघुर लके लुटहै मजा,
सिनान खायेक समय नाई
खट्टा गतर देकई धुरक धुसा
मगजे केवल वोटेक नेसा॥

जमीक दालाली घटकाली
परव तिहार लकेक संगे मेसा,
वोटे जितले बुढ़ा आंगुल उल्टी पासा,
तिनकाल जाए एककाल टेकलअ
कुल्हीर लकेक संगे नाई उठा बइसा॥

चाकरी जीवने फुटानी देखालअ
आज कहई वोटे जितले,
देशेक–देशेक काम करवअ,
से दिन आर नाई वोट़ जिनिसटा
जैनी मरद भालई बुझी सवाई
हैं! तअ आगे बोट टा होक
कौन फूले क़ोन देवता तुष्ट : देखव।

लाल माटिक लाल

सरुलिया गाँव मानभूमे जनम
लाल माटिक लाल रहलो करम

निराश रिसाक जगावेक किरण
कुटिल कंकर कंटकमय जीवन

काल वैशाखीक कालो मेघ पश्चिमेक उषा
बुझे नेई पारले टुएक वाद घुरनी झड़ेक आभास
नीतिक उपर अधिक आत्मविश्वास
अकाले चली गेले तोंय गुरुदास।

युग–युगले आवोहोमान एकी ऋतिक गान
इतिहास साक्षी कुश विद्ध, यीशु भगवान
जातिक जनक गुलीमारे साधारणजन
जेहेल खानाय हाराय जीवन बिरसा भगवान।

हाय रे अभागा देश, नेताजीक नाय संधान
अंगरक्षक हाथे इंदिरा हराया जीवन
राजीव हत्याकारी आजो वर्तमान
मरमे गाथा जाना–अजाना देश भक्तिक बलिदान।

कुड़माली चारी

● *पतित पावन केसरियार*

शिक्षक मंदाकिनी उ०वि०, बड़ा जमुआ

कुड़मी घारे जनम हामर
कुड़माली मात्र भारबी
जँदेय–जँदेय पानिक सत
तँदेय–तँदेय कुड़मीक जत ॥

वेद शास्त्र छाड़ा कुड़माली चारी
चास छाड़िके किछु बुझे नात्र पारी
नया बछर आखाइन जात्रा सगुन घरि
काम काजेक हाल पुन्या करि ॥

मधु, निरन, रोपा
भादो बाँदना आर काँटना
काम काजेक करिअ निपटा
कखन किना चास हेतेक
भालई जानिय सेइटा ॥

नारत्ता, मुजुठान, बिहा मरा
कुल खुँटेक, जीवन रितिक धारा
घर गुष्टि बाखइल भयाइद
कुड़मी कुटुम समाजेक आहेक परगमइत ॥

गराम, जाहिरा, कुदरा, मड़पथान
समेक ऊपरे धरमेक स्थान
नाटुआ करमा आर झुमर गान
छोआ नाचटाय देश विदेशे मान ॥

बतर

घमुसा मान्दर बाजा–
गाँवे–गाँवे झाड़ जंगले जा।
जागा–जागा सबसंगी के कहा
तोहराक घरे चोर ढुकलाहत,
आर सुतिया ना।

तोर भूई तोर 'माटी',
कानून देखाय हड़पी लेलो,
तौरा करि चाँटी
बापेक बेटा बटिस
लोढ़े छाड़ाय ले।

बँचाक लिखन बाँचे होइतो,
टूसु–भादू करम गान छाड़िस ना
कमरे गामछा बाँधे लड़
सब संगी के जोड़ो कर
बतर पायले छाड़िस ना।

बरदखुँटा

● पतित पावन केसरियार, बड़ा जमुआ

बाँदना परव लजकाइलअ
धर–खामारे गबर माटि देलअ
चिकन चाकन करई सभेई
झाने झापे काम–पाइट
गाल–मारेक अवसर नाई
फादा चाली उदड़ांग देखाई
कुलीक लोके देखें ढिठाई।
गैंठपूजा–गोहाइलपूजा–बरद खुँटाई
तीन दिनेई परब हाउदा खचच बेजाई।
लोउतन जामाई घार आवतेक
मान खातीर नी भेले जाउतो सगाई।
धिंगार दलचाँचर गीत गावई
मचल माहतई माँदर बाजाई
गोहाले–गोहाले गाय गुरू बाँदाई
पिठा चाल मुढ़ी खाँची–खाँची गुटिआई।
दीपावली–लक्ष्मी अलक्ष्मी
कनह किछुक धार धारी नॉञ
पाड़े गिला नेग सारई मिछाय
बरद खुँटाक दिन ऐड़ा गरू
तेल सिन्दुर माड़ले साजाई
देलाँग दाँग मानुष–पशु संगेई खेलाई
द्राविड़ संस्कृतिक शेष चिन्हा
धरे राखिस छाड़ी दिस नाई॥

"केइसन झारखण्ड"

कुरथी गाजाड़े लटर–पटर
झारखण्ड राज्य पुरलो दू बछर.
झरियाक झरके सिन्दरी सुन्दरी जरे
झाड़ जंगले सिंह राज दहाड़े।

हावड़ाक हावआ दिल्दी ढेर दुरे
राजधानी बैचारा गिरई फाँकरे
लंका पहुंचले समे बनि जात रावण
कालनेमीक लंका भाग करई मंत्रीगण ॥

शिक्षा माफिया फाँदे शिक्षा नीति,
अझबझ दिशाहीन निरर्थक पाठ्यसूचि
अभिशप्त वित्त रहीत निहि भेलो विचार
झारखण्डेक लिख पढ़ा रहि गेलो बेकार।

सस्ताराजनीतिक विद्यालये पुस्तक वितरण
मूल समस्या शिक्षाक सरकारीकरण
पंचायत बिल, डोमिसाइल आर आरक्षण
हरिजन आदिवासिक पिछड़ीक विसमिकरण ॥

साँताल हूल

● पतित पावन महतो
मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआ

कानु सिदु केवल सौंतालेक नेता निहि,
झारखण्डेक इतिहासेक पिता

पहिल साधिनताक लड़ाएक शुरुआत
जीवन बलिदानेक, शहिदेक शीर्ष गाथा

शान्त, सरल, सबुज जंगले घेरल
प्राकृतिक कराय आदिवासी रहलअ
मेनेक अंग्रेज सम्राज्यवादेक

शोषण, दमन, पीडोनेक, विरोध
आपन अधिकार भाषा संस्कृति
बाँचावेक लड़ायक प्रतीक
कानु सिदू

फिंग फूटा इजतिया रात
बागनाडिहीक आम बागान
तीस हाजार आदिवासी एकता
पराधिनताक सिकल भाँगेलाय
एक साथ, एक मत कानु-सिंदु नेता

तीस जून सारा झारखण्डेक
मानुषेक जोहार साँताल हूल जोहार

रांगा माटी

● पी.पी. केसरियार

लाल रंगेक कड़ाच माटी
गाँवेक नाम रांगा–माटी
वाँके–बाके बांके जोडिया
वारह मास सोन उपजई खाँटी।

हाँसी खेली दिन काटय
काजे नाइखेक फाँकि,
दिन खाटी दिन काटत
भाडती भाडा कुटत
गाँवे नाइखेइ माहाजनी।

लेखा–पढा कहबअ किना
एम.ए., वी.ए., मैट्रिक गादा–गादी
छट मास्टर, वडअ मास्टर गने नी पारी
दुःस्सासनेक अपशासान शान्ती गेलइ टुटी
भाई–भाई इरा–इरी काटा–काटी
माई वहिनेक इज्ञत गेइ लुटी।

लक्ष्मी सरस्वती दुयो गेलेक
ढुँडसा ललेक हाथे चाबी काठी
झुमर गान सिराई गेलेक
आर फुरालेक नागड़ाक काठी॥

झारखण्ड जीशु

● पी.पी. केसरियार

आइज हेकेक ओहे दिन टा
माफीया दुश्मनेक माश्लअ गुली टा
मने पड़ेक सेइदिनेक घटना टा
काँपी उठी हामर हिया टा

उन्नीस सौ सत्तासी
आठ आगस्त
बेला दिन बारह टा
बेतार दुरदर्शन रेडियो
सुमि आचका हटात,
निर्मल माहतोक प्राणघात।

जनम लेले मरत
विधि-विधाने कहत
मरिके अमर हेवत
भालअ करम जेई करत।

शहीद निर्मल
चिर कुमार व्रत
झारखण्डेक जिशु
लड़ाइ जाकर शपथ

प्रिया माता जगबन्धु पिता
माई माटी उलियान कदमा
जीवनेक एकटाइ लक्खय
झारखण्ड-राज्य झारखण्ड राज्य॥

ढ़नका

आढ़ाड़े पिंदाड़े टाँड़े टिकोरे,
घारे दुबारे संगे ढ़नकहत।

जाड़ेक दिने हुलहुला बातासे,
कोरकोटा लुगा ओढ़ी के।
टुवेक आग लागी ढ़नकहत।

लेघड़ पसड़ टुयूरा भुटरा
काला कुदरा छोवा गिला
माड़ेक लागी ठुनकहत आर ढ़नकहत॥

सवांग सोचा बुढ़ा मोरद
कुल्हीक पीड़ाय गिजड़हत,
हिन्द–हुन्दे भालहत, आर ढ़नकहत॥

थुबड़ा छोड़ा थुबड़ी छोड़ी
बाटे–बाटे मुसयानी करहत
बाड़ीक पिछाड़े फेड़की धरी ढ़नकहत॥

वकील बेरिस्टर मुक्तीयार
पेढ़ा कोथा लेजुड़ धरी।
कोट कछारी ढ़नकहत॥

चोंगो पोरहा फोकर फेन्दारा
देशेक आगड़ा चाकरीकग लेंगे
ऑफिसेक दुबारी ढ़नकहत॥

नीति दुरनीति पौकेटे भरी,
चौछाली छीनारी गुण्डागिरी
राजनीतिक तोपी पिन्धी ढ़नकहत॥

"झाड़खण्डेक साग"

● पी.पी. केसरियार

सनला सागे बिरहि डाल
रसुन छेंका बेहाई जावे खजई निहिं
आषड़े पहिल वर्ष
साग सरन्ति चेंथरा
धिमा सागेक पात पड़ा
लागई तिता तिता।
बाड़ि झाड़ी खापड़ा साग
किना कहव ताकर गुण
धातु दोष करई निर्मुल।
बिरही बाड़िक काना साग

साग सिरयाल रमहा पात
सो आद लागई भाजा।
खाड़ी साग लाल साछा
डिंगलाक संगे पूँई लागई खासा।
हेंट बांधेक साग शुशनी
बुड़ि बोधेक कलमी–लागई मिठा मिठा।
कंचु सागे कुछुनाई
शुधाई कुलकुलि
पतित पावन कहई साग रक्ति नाई भुलि।

छुटु धीवर

केवट घरे जनम, छुटु धीवर नाम,
माछ धरा बिका–किना आमार काम,
बछर–बछर जल नाई, पाँक फाटी बाँध गेलेक सुखाय,
चुना माछेक हाट–बाट गेलेक फुराई।

रांगा बाँध बूढ़ी बाँध, दले आहेक ढाकाय,
दिन सागर छिंडा जाले मरिकमर दुःखाय,
बड़ बाँध रहलेक सरकार देलो डाकाय,
कानूननेक अझःबझः आसल चासी छितकी पाराय।

कल कारखाना गेरेजेक तेल मोबिल बहाय,
लुल्ही डाँइका पुँठी गोडोय माछेक प्राण जाइक।
पेराशुटेक टाना जाल, बाबू गिंलाय धमकाय,
जात पेशा माछ चास, बूझि उठि जाय।

बरवा मोड़े सांझ विहान हाट लागाय,
भिनसोरा राते चालानी माछ आनेलाय जाय,
झारखण्डेक ऐसन माछेक आकाल देखी नाई,
पतित पावन कहेय, प्राकृतिक नियम .....
गेलेक बदलाय।

परिचय :

क्रेसरियार कुल खूँट रांगामाटिया ग्राम, जिला–मानभूम, माता विश्वरानी, पिता दिवाकर का तीसरा बेटा पतित पावन। जनम – 6–8–1952

- पाड़ा शवनारायण हाई स्कूल ले उच्च माध्यमिक (1970)
- रघुनाथपुर कॉलेज ले विज्ञान स्नातक (1973)
- बेलुरमठ रामकृष्ण मिशन बी.एड. (1978–79)
- राँची विश्व विद्यालय ले एम.ए. (कुड़माली) 1987

1980 साले झारखण्ड मुक्ति मोर्चा जन्मदाताक विनोद बिहारी महतोक संगे

परिचय : वर्तमान : मंदाकिनी उच्च विद्यालये विज्ञान शिक्षक बचपन से ही आपन मातृभाषा तथा राजनैतिक सामाजिक संगठक कार्य में रुचि।

मूल्य – 10/–

मुद्रक : किसान प्रिंटिंग प्रेस, कल्याणपुर बस्ती।